Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 19-07-2024, Accepted: 18-08-2024, Published: 02-09-2024
Volume 5, Issue 2, 2024, Page No. 3-6

समावेशी शिक्षा के प्रति रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति

अजय कुमार यादव[1], वंदना चतुर्वेदी[2]
[1] शिक्षा संकाय, आर के डी एफ विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत
[2] सह प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, आर के डी एफ विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
वर्तमान शोधपत्र का उद्देश्य समावेशी शिक्षा के प्रति रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति की जांच करना है। यह अध्ययन 40 सरकारी और गैर–सरकारी हाई स्कूलों में किया गया था। अध्ययन का उद्देश्य रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है। नमूने में 187 शिक्षक शामिल थे, जिनमें से 135 महिलाएँ (23 सरकारी और 112 गैर–सरकारी) और 52 पुरुष (21 सरकारी और 31 गैर–सरकारी) थे। सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग करके वर्णनात्मक अध्ययन किया गया था। डेटा को स्व–निर्मित समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी का उपयोग करके एकत्र किया गया था, जिसमें 5 बिंदु लाइकर्ट स्केल के रूप में 28 कथन थे। परिणाम से पता चला कि महिलाओं की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पुरुष शिक्षकों की तुलना में बेहतर है और गैर–सरकारी शिक्षकों में उनके सरकारी समकक्षों की तुलना में अभिवृत्ति का स्तर अधिक है।

मूल शब्दः शिक्षकों की अभिवृत्ति, समावेशी शिक्षा, रीवा जिला

समावेशी शिक्षा वर्तमान संदर्भ में महत्वपूर्ण है, जहाँ सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई विविधता बढ़ रही है, और शिक्षा तक पहुँच असमान बनी हुई है। शिक्षा के लिए एक समावेशी अभिवृत्ति यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि सभी बच्चों को, उनकी क्षमताओं, पृष्ठभूमि या सामाजिक–आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना, सीखने और अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने का अवसर मिले। अध्ययनों से पता चला है कि समावेशी शिक्षा से छात्रों के लिए बेहतर शैक्षणिक परिणाम, बेहतर सामाजिक कौशल और बेहतर मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त होता है (कल्याणपुर और हैरी, 2012; पिजल और फ्रॉस्टैड, 2019) [10, 12]। समावेशी शिक्षा भेदभाव को कम करके और सभी छात्रों के बीच अपनेपन की भावना पैदा करके समानता और सामाजिक न्याय को भी बढ़ावा देती है (यूनेस्को, 2019) [14]। विविधता को अपनाने और छात्रों को व्यक्तिगत सहायता प्रदान करने से, समावेशी शिक्षा एक अधिक समावेशी और सहिष्णु समाज को बढ़ावा देती है, जो आज की परस्पर जुड़ी दुनिया में आवश्यक है (बार्टन एट अल., 2017) [4]।

समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे एक ऐसा स्कूली माहौल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो सभी छात्रों के समावेश को महत्व देता है और उनका समर्थन करता है, चाहे उनकी पृष्ठभूमि या क्षमताएँ कुछ भी हों। जब शिक्षक, अभिभावक और छात्र समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं, तो वे समान अवसरों को बढ़ावा देते हैं, विविधता का जश्न मनाते हैं और समावेशिता और स्वीकृति की संस्कृति को बढ़ावा देते हैं। यह बदले में, विकलांगों सहित सभी छात्रों के लिए बेहतर शैक्षणिक परिणामों को जन्म दे सकता है। इसके अतिरिक्त, एक समावेशी शिक्षा प्रणाली छात्रों को एक विविध और समावेशी समाज में जीवन के लिए तैयार करती है, जिससे एक अधिक स्वीकार्य और समावेशी दुनिया बनाने में मदद मिलती है। इसलिए, समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करना एक सहायक और स्वागत योग्य शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए आवश्यक है जो सभी छात्रों को लाभान्वित करता है। समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखने के लिए स्कूल षिक्षकों के लिए यह आवश्यक है क्योंकि वे एक समावेशी स्कूल वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अपने स्कूलों के शैक्षिक नेताओं के रूप में, स्कूल षिक्षक अपने संस्थानों की टोन और संस्कृति निर्धारित करने के लिए जिम्मेदार हैं। यदि स्कूल षिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है, तो वे एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा दे सकते हैं जो सभी छात्रों के समावेश को महत्व देता है और उसका समर्थन करता है। समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखने वाले स्कूल षिक्षक अपने स्कूलों को साक्ष्य–आधारित प्रथाओं को अपनाने में नेतृत्व कर सकते हैं जो सभी छात्रों की शैक्षणिक और सामाजिक सफलता का समर्थन करते हैं। वे विकलांग छात्रों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम में समायोजन और संशोधनों के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित और समर्थन भी कर सकते हैं। शोध में पाया गया है कि लिंग और संस्थान के प्रकार के आधार पर स्कूल षिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अंतर है। वर्तमान अध्ययन में स्कूल षिक्षकों के बीच उनके लिंग और उनके संस्थान के प्रकार के संदर्भ में समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन की आवश्यकता

किसी भी पहल की सफलता की संभावना के लिए यह आवश्यक है कि संस्थानों के षिक्षक इस बात से आश्वस्त हों कि यह बहुत जरूरी बदलाव लाने जा रहा है। एक स्कूल षिक्षक किसी संस्थान का सबसे प्रभावशाली व्यक्ति होता है और नई पहलों का मार्गदर्शक होता है। एक विशेष आवश्यकता वाले बच्चे का सामान्य स्कूल में अक्सर स्वागत नहीं किया जाता है और कई षिक्षक समावेशी शिक्षा के विचार को हतोत्साहित करते हैं क्योंकि सामान्य बच्चों के माता–पिता इसका स्वागत नहीं करते हैं। उन्हें सामान्य कक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का होना वर्जित लगता है और बाजार की मांग के कारण समावेशी शिक्षा को अक्सर हतोत्साहित किया जाता है। यह आवश्यक है कि लंबे समय में समावेशी शिक्षा के सफल कार्यान्वयन के लिए स्कूलों के षिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण हो। हालाँकि सरकार ने सभी सामान्य स्कूलों में समावेशी शिक्षा को अनिवार्य बनाने के लिए कई नियम और कानून बनाए हैं, लेकिन जब तक स्कूल के षिक्षक का समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं होगा, तब तक समावेशी शिक्षा को सही मायने में

लागू करना संभव नहीं है। इस क्षेत्र में कई शोध अध्ययन किए गए हैं। घासेमी एट अल. (2020) [7] द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि महिला षिक्षक, पुरुष षिक्षकों की तुलना में समावेशी शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक थीं। हालांकि, ह्वांग और इवांस (2011) [9] द्वारा किए गए एक अध्ययन में समावेशी शिक्षा के प्रति पुरुष और महिला षिक्षकों के रवैये में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। चितियो और व्हीलर (2018) [6] ने पाया कि निजी स्कूलों के षिक्षक पब्लिक स्कूलों के षिक्षकों की तुलना में समावेशी शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक थे, जबकि अल–ह्दब (2017) [2] द्वारा किए गए एक अध्ययन में समावेशी शिक्षा के प्रति विभिन्न प्रकार के स्कूलों के षिक्षकों के रवैये में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। यह भी पाया गया कि कई तटस्थ अध्ययन भी हैं। जैसे, अल–हरथी एट अल. (2020) ने समावेशी शिक्षा के प्रति पुरुष और महिला स्कूल षिक्षकों के रवैये में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया। नकवी एट अल. (2017) [11] ने समावेशी शिक्षा के प्रति पब्लिक और प्राइवेट स्कूलों के स्कूल षिक्षकों के रवैये में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया। इसलिए इस क्षेत्र में और अधिक शोध करना आवश्यक है ताकि ज्ञान में वृद्धि हो और अंतर तथा इसके प्रभाव के बारे में स्पष्ट विचार प्राप्त हो। वर्तमान अध्ययन इसी दिशा में एक छोटा सा प्रयास है।

अध्ययन के उद्देश्य

रीवा जिले के हाई स्कूल में कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. पुरुष और महिला हाई स्कूल शिक्षकों के औसत समावेशी शिक्षा अभिवृत्ति स्कोर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
2. सरकारी और गैर–सरकारी हाई स्कूल शिक्षकों के औसत समावेशी शिक्षा अभिवृत्ति स्कोर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

शोध विधि

वर्तमान शोध कार्य एक "पूर्वव्यापी अध्ययन" है, जहाँ स्वतंत्र चरों यानी लिंग और स्कूल के प्रबंधन का प्रभाव आश्रित चरों यानी समावेशी शिक्षा के बारे में हाई शिक्षकों की अभिवृत्ति पर देखा गया है। वर्तमान अध्ययन के नमूने में रीवा जिले के 40 समावेशी स्कूल शामिल हैं। इनमें से 12 सरकारी स्कूल और 28 गैर–सरकारी स्कूल थे। उपर्युक्त समावेशी स्कूलों को यादृच्छिक रूप से चुना गया था और उन स्कूलों को महत्व दिया गया था जहाँ विकलांग बच्चे नामांकित थे। अध्ययन में 187 शिक्षकों को शामिल किया गया था, जिनमें से 135 महिलाएँ (23 सरकारी और 112 गैर–सरकारी) और 52 पुरुष (21 सरकारी और 31 गैर–सरकारी) थे।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

वर्तमान अध्ययन के लिए डेटा एकत्र करने के लिए शोध ने समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी विकसित किया। समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी शोधकर्ता द्वारा विकसित एक स्व–प्रशासित उपकरण है। इसमें शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को मापने के लिए 28 कथन हैं। यह मापनी 5 पॉइंट लाइकर्ट स्केल के रूप में है जिसमें दृढ़ता से सहमत, सहमत, निश्चित नहीं, असहमत और दृढ़ता से असहमत विकल्प हैं।

सांख्यिकीय तकनीक

मध्यमान, मानक विचलन (एसडी) और टी–टेस्ट लागू करके विश्लेषण किया गया था।

परिणाम और चर्चाएँ

अध्ययन का उद्देश्य रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है।' उद्देश्य को पूरा करने के लिए, दो परिकल्पनाएँ तैयार की गई हैं। निम्नलिखित पंक्तियों में उपरोक्त उद्देश्य के लिए परिकल्पनावार विश्लेषण प्रदान किया गया है।

रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

अध्ययन का चौथा उद्देश्य है 'रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।' जिसके लिए दो परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी है। इनका विश्लेषण एवं व्याख्या निम्न पंक्तियों में की गयी है।

रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष और महिला शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मान में अंतर को ज्ञात करने के लिए तैयार की गई परिकल्पना है 'रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।' रीवा जिले के हाई स्कूलों में शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का लिंग के आधार पर तुलना करने के लिए पुरुष एवं महिला शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के समग्र मान का विश्लेषण 'टी' परीक्षण की मदद से किया गया। सरणी 1 पुरुष और महिला हाई स्कूल शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलन और 'टी' का गणनामान दर्शाती है।

सारणी क्रमांक 1: रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी'' का गणनामान

समूह	समूह की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	'ज' का गणनामान
पुरुष	52	89.63	19.784	185	5.568′
महिला	135	107.56	19.584		

′0.01 स्तर पर मान्य

रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अंतर है को ज्ञात करने के लिए एक द्वि–पार्श्व स्वतंत्र नमूना टी–परीक्षण किया गया। शून्य परिकल्पना, जिसमें कहा गया कि रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है, को अस्वीकार कर दिया गया (टी (185)=5.568) पी ढ 0.01/ द्वि–पार्श्व)। पुरुष शिक्षकों का मध्यमान 89.63 (मानक विचलन=19.784) था, जबकि महिला शिक्षकों का मध्यमान 107.56(मानक विचलन=19.584) था। प्रभाव का आकार बड़ा (कोहेन का क=1.21) था, जो पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा अभिवृत्ति में पर्याप्त अंतर दर्शाता है। निष्कर्ष यह सुझाव देने के लिए प्रमाण प्रदान करते हैं कि रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अंतर है। महिलाओं की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति, पुरुष शिक्षकों की तुलना में बेहतर है। इस प्रकार यह अनुमान लगाया जा सकता है कि समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों के लिंग पर निर्भर करती है।

अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि सीबीएसई स्कूलों के पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर है, जिसमें महिला शिक्षकों का अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक है। ये निष्कर्ष कुछ पिछले अध्ययनों के अनुरूप हैं, जिन्होंने समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में लिंग अंतर की सूचना दी है। उदाहरण के लिए, चू और क्लिंगर (2014) के एक अध्ययन में पाया गया कि महिला शिक्षकों का पुरुष शिक्षकों की तुलना में समावेश के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण था। इसी तरह, लियासिडौ और ज़ेम्बिलास (2017) के एक अध्ययन में पाया गया कि साइप्रस में महिला शिक्षकों का पुरुष शिक्षकों की तुलना में अधिक समावेशी दृष्टिकोण था। हालाँकि, साहित्य में कुछ विपरीत निष्कर्ष भी हैं। उदाहरण के लिए, विल्टन और कॉन्स्टेंटाइन (2013) के एक अध्ययन में संयुक्त राज्य अमेरिका में शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण लिंग अंतर नहीं पाया गया। कुयिनी और अलहसन (2014) के एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि घाना में महिला शिक्षकों की तुलना में पुरुष शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण था। उपरोक्त परिणाम इस तथ्य के कारण हो सकते हैं कि लिंग भूमिकाओं और समाजीकरण में अंतर इन अंतरों में योगदान दे सकते हैं (चू और क्लिंगर, 2014), जबकि अन्य ने सुझाव दिया है कि सांस्कृतिक मानदंड और शैक्षिक नीतियों जैसे प्रासंगिक कारक एक भूमिका निभा सकते हैं (लियासिडौ और ज़ेम्बिलास, 2017)। उपरोक्त निष्कर्षों के कई कारण हो सकते हैं। एक संभावित व्याख्या यह हो सकती है कि महिला शिक्षक अधिक सहानुभूतिपूर्ण और पोषण करने वाली हो सकती हैं, और समावेशी शिक्षा के प्रति उनका झुकाव अधिक हो सकता है। दूसरी ओर, पुरुष शिक्षकों की अलग–अलग ताकतें और विशेषज्ञता के क्षेत्र हो सकते हैं जो जरूरी नहीं कि समावेशी शिक्षा से संबंधित हों। उन्हें कक्षा में विभिन्न चुनौतियों का भी सामना करना पड़ सकता है जो समावेशी शिक्षा से जुड़ने की उनकी क्षमता को प्रभावित कर सकती हैं।

रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मान में अंतर को ज्ञात करने के लिए तैयार की गई परिकल्पना है 'रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।' रीवा जिले के हाई स्कूलों में शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्कूल के प्रकार के आधार पर तुलना करने के लिए सरकारी और निजी शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के समग्र मान का विश्लेषण 'टी' परीक्षण की मदद से किया गया। सरणी 2 सरकारी और निजी हाई स्कूल शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलन और 'टी' का गणनामान दर्शाती है।

सारणी क्रमांक 2: रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी'' का गणनामान

समूह	समूह की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	'ज' का गणनामान
सरकारी	44	89.89	21.055	185	4.639′
निजी	143	106.48	19.697		

′0.01 स्तर पर मान्य

रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अंतर है को ज्ञात करने के लिए एक द्वि–पार्श्व स्वतंत्र नमूना टी–परीक्षण किया गया। शून्य परिकल्पना, जिसमें कहा गया कि रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है, को अस्वीकार कर दिया गया (टी (185)=4.639) पी ढ 0.01/ द्वि–पार्श्व)। पुरुष शिक्षकों का मध्यमान 89.89 (मानक विचलन=21.055) था, जबकि महिला शिक्षकों का मध्यमान 106.48 (मानक विचलन=19.697) था। प्रभाव का आकार बड़ा (कोहेन का क=0.91) था, जो सरकारी और निजी शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा अभिवृत्ति में पर्याप्त अंतर दर्शाता है। निष्कर्ष यह सुझाव देने के लिए प्रमाण प्रदान करते हैं कि रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अंतर है। निजी स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति, सरकारी स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की तुलना में बेहतर है। इस प्रकार यह अनुमान लगाया जा सकता है कि रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षका की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति इस बात पर निर्भर करती हैं की वे किस प्रकार के स्कूल में कार्यरत हैं।

पिछले कुछ अध्ययनों में भी विभिन्न प्रकार के संस्थानों के शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अंतर की सूचना दी गई है। उदाहरण के लिए, खान और खान (2009) के एक अध्ययन में पाया गया कि पाकिस्तान में सरकारी स्कूल के शिक्षकों की तुलना में निजी स्कूल के शिक्षकों में समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर अधिक था। इसी तरह, सिंह और कौर (2018) के एक अध्ययन में बताया गया कि भारत में ग्रामीण स्कूलों के शिक्षकों की तुलना में शहरी स्कूलों के शिक्षकों में समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर अधिक था। हालांकि, कुछ अध्ययनों में विभिन्न प्रकार के संस्थानों के शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं बताया गया है। उदाहरण के लिए, अवान और बुख़्श (2019) के एक अध्ययन में पाकिस्तान में सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इसी तरह, सलीम एट अल. (2018) के एक अध्ययन में पाकिस्तान में ग्रामीण और शहरी स्कूलों के शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं बताया गया। इसके विपरीत, कुछ अध्ययनों में शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर संस्थागत प्रकार के प्रभाव के बारे में मिश्रित निष्कर्ष बताए गए हैं। उदाहरण के लिए, थापा और थापा (2020) के एक अध्ययन में बताया गया कि संस्थागत प्रकार नेपाल में शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का एक महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। हालांकि, आलम एट अल. (2018) द्वारा किए गए एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि बांग्लादेश में संस्था का प्रकार शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का एक महत्वपूर्ण करक था, लेकिन समावेशी शिक्षा कार्यक्रम के प्रकार के आधार पर प्रभाव की दिशा अलग–अलग थी।

उपर्युक्त परिणाम का एक संभावित कारण यह हो सकता है कि सरकारी स्कूलों में अधिक नौकरशाही और पदानुक्रमित संगठनात्मक संरचना हो सकती है, जो समावेशी शिक्षा प्रथाओं को लागू करना और बनाए रखना अधिक कठिन बना सकती है। दूसरी ओर, गैर–सरकारी स्कूलों में अधिक लचीली और नवीन संगठनात्मक संस्कृति हो सकती है जो समावेशी शिक्षा प्रथाओं को लागू करने और अपनाने के लिए बेहतर अनुकूल है।

निष्कर्ष

1. रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अंतर है। महिलाओं की समावेशी शिक्षा के प्रति

अभिवृत्ति, पुरुष शिक्षकों की तुलना में बेहतर है। इस प्रकार यह अनुमान लगाया जा सकता है कि समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों के लिंग पर निर्भर करती है।

2. रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अंतर है। निजी स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति, सरकारी स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की तुलना में बेहतर है। इस प्रकार यह अनुमान लगाया जा सकता है कि रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षका की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति इस बात पर निर्भर करती हैं की वे किस प्रकार के स्कूल में कार्यरत हैं।

निहितार्थ

चूँकि यह पाया गया है कि समावेशी शिक्षा के बारे में जागरूकता और समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति, लिंग और संस्थान के प्रकार जैसे कई कारकों पर निर्भर करता है। शिक्षक शिक्षा स्तर के दौरान इन अंतरों को पूरा करने के लिए रणनीति तैयार करने की तत्काल आवश्यकता है। इसके अलावा, यह पाया गया है कि स्कूल का प्रकार समावेशी शिक्षा के बारे में जागरूकता और हाई स्कूलों के शिक्षक के समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करता है। शिक्षण प्रशिक्षण के दौरान इन पहलुओं की समीक्षा करने और उन्हें विकसित करने की तत्काल आवश्यकता है ताकि विभिन्न प्रकार के स्कूलों के शिक्षक समावेशी शिक्षा के बारे में इष्टतम जागरूकता और समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति विकसित कर सकें।

सन्दर्भ सूची

1. अल–हार्थी, ए. एस., अल–बलूशी, एन. ए., एव अल–मामारी, एफ. एम. ओमान में समावेशी शिक्षा की ओर पुरुष और महिला स्कूल प्राचार्यों के दृष्टिकोण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ डिसएबिलिटी, डेवलपमेंट एंड एजुकेशन,2020:67(6):567–580. doi: 10.1080/1034912X.2019.1678347
2. अल–हरूब, ए. फिलिस्तीन में समावेशी शिक्षा की ओर प्राचार्यों के दृष्टिकोण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंक्लूसिव एजुकेशन,2017:21(7):715–727. doi: 10.1080/13603116.2016.1241523
3. अवरामिडिस, ई., एव नॉर्विच, बी.एकीकरण/समावेशन की ओर शिक्षकों के दृष्टिकोणः साहित्य की समीक्षा. यूरोपियन जर्नल ऑफ स्पेशल नीड्स एजुकेशन,2002:17(2):129–147.
4. बार्टन, एल., आर्मस्ट्रांग, एफ., ओसबोर्न, ए. समावेशी शिक्षाः अंतरराष्ट्रीय नीति और व्यवहार. ब्लूम्सबरी पब्लिशिंग, 2017.
5. बंच, जी., वैलेओ, ए., एव डेमौरो, ए. समावेशी प्रथाओं को लागू करने के लिए समावेशी नेतृत्व की प्राचार्यों की धारणाएँ. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ होल स्कूलिंग,2015:11(1):1–21.
6. चितियो, एम., एव व्हीलर, एम. ज़िम्बाब्वे के प्राचार्यों के समावेशी शिक्षा की ओर दृष्टिकोण. जर्नल ऑफ रिसर्च इन स्पेशल एजुकेशनल नीड्स,2018:18(4):292–299. कवपः 10.1111/1471–3802.12351
7. घसेमी, वी., महदीज़ादेह, ए., एव करामी, ए. समावेशी शिक्षा की ओर पुरुष और महिला स्कूल प्राचार्यों के दृष्टिकोण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट,2020:76:102174. कवपः 10.1016/j-ijedudev.2019.102174
8. जियांग्रेको, एम. एफ. समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख विचार. रेमेडियल और स्पेशल एजुकेशन,2010:31(6):369–377.
9. ह्वांग, जे. वाई., एव इवांस, डी. आर. दक्षिण कोरियाई स्कूल प्राचार्यों के बीच समावेशन की ओर दृष्टिकोण में लिंग अंतर. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ डिसएबिलिटी, डेवलपमेंट एंड एजुकेशन,2011:58(3):259–271. कवपः 10.1080/1034912ग्. 2011.597330
10. कल्याणपुर, एम.,–हैरी, बी. समावेशी शिक्षा की ओर बढ़नाः साहित्य की समीक्षा. हार्वर्ड एजुकेशनल रिव्यू,2012:82(3):403–424.
11. नकवी, एच. आर., रियाज़, एम. एन., हुसैन, ए., एव मलिक, एस. ए. समावेशी शिक्षा की ओर स्कूल प्राचार्यों के दृष्टिकोणः पाकिस्तान में सार्वजनिक और निजी स्कूलों का तुलनात्मक अध्ययन. जर्नल ऑफ रिसर्च इन स्पेशल एजुकेशनल नीड्स,2017:17(3):174एव183.
12. पिजल, एस. जे., एव फ्रॉस्टैड, पी. समावेशी शिक्षाः ईईआरए समीक्षा. यूरोपीय शैक्षिक अनुसंधान जर्नल,2019:18(4):436–455.
13. स्ली, आर. अनियमित स्कूलः बहिष्करण, स्कूलिंग, और समावेशी शिक्षा. रूटलेज, 2011.
14. यूनेस्को. शिक्षा में समावेशन पर नीति दिशानिर्देश. यूनेस्को पब्लिशिंग, 2019.